Daly College, Indore

सामूहिक कविता पाठ कक्षा **1A**

क्रिकेट

बिल्ली यह बोली चूहों से,
आओ खेलें खेल,
प्यारा क्रिकेट, खेल निराला,
मन का होगा मेल।

लकड़ी की थी गेंद और था,
खूब बड़ा-सा बल्ला,
खेल शुरू जब हुआ फील्ड में,
मचा धमाधम हल्ला।

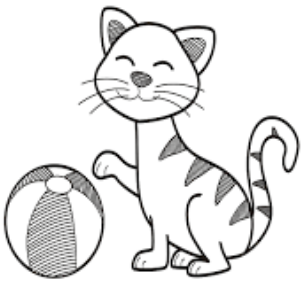

चूहे ने दिखलाई फुर्ती,
कसकर मारा छक्का,
होश उड़े फिर तो बिल्ली के,
रह गई हक्का-बक्का।

भूल गई वह अपना वादा,
झट चूहों पर झपटी,
चूहे बोले-भागो, भागो,
यह तो निकली कपटी।

Daly College, Indore

सामूहिक कविता पाठ कक्षा **1B**

शेर और चूहा

सोया एक शेर जंगल में,
चूहा उस पर लगा कूदने।
गुस्सा बहुत शेर को आया,
पकड़ा चूहा पंजे से उसने।

चूहा लगा कांपने डर से,
बोला दोनों हाथ जोड़ कर।
माफ करो जंगल के राजा,
गलती नहीं करूँगा मैं अब।

छोटा बहुत आपके सामने,
पर अहसान नहीं भूलूँगा।
जब भी तुम मुश्किल में होंगे,
मैं सबसे पहले पहुंचूंगा।

हंसने लगा शेर जोरों से,
तुम चूहे क्या मदद करोगे।
चलो छोड़ देता हूँ तुमको,
तुम मेरा क्या पेट भरोगे।
शेर फंस गया था जंगल में,
कुछ दिन बाद एक फंदे में।
जितना ज्यादा जोर लगाता,

कसता जाता उतना फंदे में।

सुन कर दर्द भरी चीखों को,
चूहा वहाँ भाग कर आया।
बोला तुम अब मत घबराओ,
तुम्हें बचाने मैं हूँ आया।

कुतर दिया फंदा दांतों से,
शेर जाल से बाहर आया।
आज़ादी अपनी पाने पर,
चूहे को आभार जताया।

निर्बल पर तुम दया दिखाओ,
दया का फल होता मीठा।
होता हुनर सभी में कुछ तो,
कद से न गुण होता छोटा।
निधि अग्रवाल

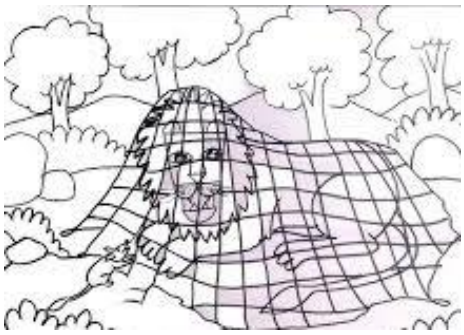

Daly College, Indore

<u>सामूहिक कविता पाठ कक्षा **I-C**</u>

फूल

कवि — श्रीनाथ सिंह

फूल जगत के हैं हम प्यारे,
रूप-रंग में न्यारे-न्यारे।
रूप-रंग में न्यारे-न्यारे,
हर बगिया के हम दुलारे।

काम हमारा है मुसकाना,
सुंदर आस-पड़ोस बनाना।
काम हमारा है मुसकाना,
हर चेहरे पर हँसी सजाना।

भौंरे गान सुना जाते हैं,
जहाँ हमें फूला पाते हैं।
जहाँ हमें फूला पाते हैं,
वहीं सजे उपवन के गहने।

पाठ प्रेम का पढ़ते आला,
एक बनाते हम मिल माला।
एक बनाते हम मिल माला,
सबको जोड़ें, यही निवाला।

सदा मेल से शोभा पाते,
भेदभाव हम दूर भगाते।
भेदभाव हम दूर भगाते,
हर मन में प्रेम जगाते।

कभी न मुख पर दुःख लाते हैं,
हर हालत में मुसकाते हैं।
हर हालत में मुसकाते हैं,
खुशबू बन हर ओर लुटाते हैं।

Daly College, Indore

<u>सामूहिक कविता पाठ कक्षा **I-D**</u>

सर्दी, गर्मी और बरसात

कवि — वितीता कृष्णा

सर्दी आई, सर्दी आई,

आओ, ले लो गरम रज़ाई।

कोट पहन लो, टोपी ले लो,

ऊनि कपड़ों की अब बारी आई।

हाँ, ऊनि कपड़ों की अब बारी आई।

गर्मी की जब धूप पड़ेगी,

पंखा ले आएगी मई।

लस्सी, शरबत, आइसक्रीम के,

खूब मज़े ले लेना भाई।

हाँ, खूब मज़े ले लेना भाई।

फिर जब आएगी बरसात,

छतरी लेकर जाना भाई।

सारा आँगन धुल जाएगा,

देखेंगे हरियाली छाई।

हाँ, देखेंगे हरियाली छाई।

हर ऋतु का रंग निराला,

हर मौसम है कुछ तो प्यारा।

सर्दी, गर्मी या हो बरसात,

सबका अंदाज़ है सबसे न्यारा।

हर ऋतु अलग स्वाद लाती,

कुछ सिखाती, कुछ हँसाती।

प्रकृति की ये अनुपम माया,

सबके मन को खूब भाती।